ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 111-114

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

शैलीविज्ञान की दृष्टि से फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों का विश्लेषण

मधु कुमारी

शोध अध्येत्री– हिंदी–विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, (पंजाब) भारत

Received-19.10.2022, Revised-26.10.2022, Accepted-30.10.2022 E-mail: madhugupta583@gmail.com

सारांशः ***शैलीविज्ञान दो शब्दों के मेल से बना है शैली+विज्ञान अर्थात् शैली के वैज्ञानिक अध्ययन को शैलीविज्ञान कहते है। रचनाकार अपनी भाषा में सामान्य भाषा प्रयोग न करके विशिष्ट भाषा का प्रयोग करता है। जिसमें वह अपनी अभिव्यक्ति के अनुसार विशिष्ट ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों और अर्थों का चयन करता है। भाषा की यह विशिष्टता पूर्ण चयन ही आगे चलकर रचनाकार की शैली बनती है। शैलीविज्ञान की परिभाषा 'रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव' के शब्दों में इस प्रकार है "शैलीविज्ञान भी साहित्य को समझने–समझाने की एक दृष्टि है जो 'शैली' के साक्ष्य पर एक ओर साहित्यिक कृति की संरचना (स्ट्रक्चर) और गठन (टेक्सचर) पर प्रकाश डालती है और दूसरी ओर कृति का विश्लेषण करते हुए उसमें अंतर्निहित साहित्यिकता का उद्घाटन करती है।"[1] शैलीविज्ञान और भाषाविज्ञान का आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध है। भाषाविज्ञान में ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया जाता है जबकि "शैलीविज्ञान में भाषिक विश्लेषण के साथ–साथ उसके प्रभाव–पक्ष का भी अध्ययन किया जाता है, इसी के साथ कथ्य की बारीकियों से भाषिक संरचना के ध्वनीय, शब्दीय, रुपीय, वाक्यीय और अर्थीय पक्षों को जोड़ता है।"[2] शैलीविज्ञान के पांच तत्व है– चयन, विचलन, समानांतरता, अप्रस्तुत–विधान, ध्वनीय शैलीविज्ञान। इन्हीं पांच तत्वों के आधार को लेकर मैंने रेणु की सात कहानियाँ रसप्रिया, तीसरी कसम, लाल पान की बेगम, संवदिया, एक आदिम रात्रि की महक, जलवा, रेखाएं–वृत्तचक्र का शैलीवैज्ञानिक विश्लेषण किया है।***

कुंजीभूत शब्द–शैलीविज्ञान, विचलन, समानांतरता, ध्वनीय शैलीविज्ञान, संवदिया, आदिम रात्रि की महक, जलवा, रेखाएं–वृत्तचक्र।

आधुनिक काल के कथासाहित्य में 'फणीश्वरनाथ रेणु' का विशिष्ट स्थान है। रेणु ने अपने कथा साहित्य के अंतर्गत आंचलिकता और आधुनिकता को बहुत ही कलात्मक ढंग से सम्प्रेषित किया है। रेणु 'नयी कहानी' के दौर के कहानीकार माने जाते हैं। नयी कहानी में जीवन का एक लघु– प्रसंग, प्रसंग–खंड, मुड़ विचार अथवा विशिष्ट व्यक्ति–चरित्र को कथानक बनाया गया है। इसी के साथ नयी कहानी में नया शिल्प, घटना प्रसंग, यथार्थवाद, को अपनाया गया। भाषा के स्तर पर नयी भावभूमियों का सृजन बहुत ही कलात्मक और लयात्मक ढंग से किया जाने लगा। नयी कहानी की इन भावगत और भाषागत विशेषताओं को अपने कथा–साहित्य में समेटते हुए रेणु ने अपनी कहानियों का सृजन किया। रेणु अपने युग के सबसे बड़े शैलीकार थे। जिन्होंने अपनी कलात्मक लेखनी के बल पर साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। फनीश्वरनाथ रेणु ने अपनी कहानियों को आंचलिक भूमि पर मानवीय संवेदना का संसार खड़ा किया। आंचलिकता का सम्बन्ध 'क्षेत्र विशेष' से होता है। जिसमें उस 'क्षेत्र विशेष' की लोकसंस्कृति शामिल हो। रेणु ने अपनी कहानियों के कथानक को बिहार के 'पूर्णिया' जिले से लिया है। जिसमें उन्होंने वहां की स्थानीय लोकसंस्कृति को शामिल किया है। रेणु ने अपनी कहानियों में ग्रामीण लोगों के रूप–रंग, हाव–भाव, आचार–विचार आदि को विशिष्ट ढंग से अभिव्यक्त किया है। रेणु की कहानियों में सबसे बड़ी विशेषता है उनका गाँव के प्रति मोह होते हुए भी उन्होंने तटस्थ भाव से ग्राम्य–जीवन की विषमताओं और विद्रूपताओं का चित्रण किया है। वास्तविकता के धरातल पर ग्रामीण लोगों के मनोभावों को अभिव्यक्त किया है। जिसमें उनके सुख–दुख दोनों को पूर्ण रूप से शामिल है। इसी के साथ उन्होंने प्र.ति के मनोरम दृश्यों और लोकगीतों का चित्रण किया है। भाषा प्रयोग की दृष्टि से रेणु की कहानियाँ अद्भुत सामर्थ्य लिए हुए हैं। भावों के अनुकूल रेणु ने भाषा का कलात्मक ढंग से चयन किया है। रेणु ने ग्रामीण जीवन को खुद देखा, परखा, भोगा है इसलिए उनकी कहानियों में ग्राम्य जीवन के प्रति उनकी आत्मीयता को भली–भांति देखा जा सकता है। उनकी कहानियों की लोकप्रियता का आधार उनकी बेबाक लिखने की कला है। जिसे भाषा के स्तर पर उन्होंने तराशकर अपनी कहानियों को रोचक और मार्मिक बनाया है। भाषा में उनका उचित चुनाव ही उनकी शैली को विशिष्ट और दूसरे रचनाकारों से उन्हें भिन्न बनाती है। 'क्षेत्र विशेष' को ध्यान में रखते हुए रेणु ने अपनी कहानियों में वहाँ के देशज मुहावरों, लोकोक्तियों, लोकगीतों, परंपराओं, खान–पान इन सभी को भोजपुरी शब्दों और वाक्यों के द्वारा स्वभाविक अभिव्यक्ति प्रदान की। रेणु ने अपनी कहानियों में ध्वन्यात्मकता का जबरजस्त प्रयोग किया है। जिसे हम रेणु की संवाद शैली में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। इसके अतरिक्त कहानियों में उन्होंने ग्रामीण जीवन के छोटे–छोटे बिबों एवं प्रतीकों का प्रयोग किया है। जो घटना प्रसंग पाठक को रोचकता एंव संवेदना से भर देती है। रेणु ने अपने लिखने की कला को विशिष्ट बनाने के लिए भाषा के स्तर पर चयन को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

चयन का अर्थ है 'चुनना' अर्थात् 'एकाधिक' में से किसी 'एक' को चुन लेना। शैलीविज्ञान के प्रसंग में इसका अर्थ होगा किसी भाषा में प्राप्त एकाधिक इकाइयों या व्यवस्थाओं में अपनी अभिव्यक्ति के लिए 'किसी एक को चुन लेना।"[3] रेणु ने अपनी कहानियों की भाषा शैली के अंतर्गत ध्वनियों का बहुत सुंदर चयन किया है। भाषा में ध्वनि–चयन से उन्होंने ध्वनियों के प्रभाव के द्वारा लोगों के भावों को प्रस्तुत किया है।

'रसिकप्रिया' जिसमें उन्होंने जातिवाद की विषमताओं को कलात्मक ढंग से उकेरा है। कहानी के मुख्य पात्र 'मिरदंगिया' के पास मृदंग बजाने एवं गाने की कला है। 'रामपतिया' से वह प्रेम करता है पर उनका विवाह नहीं हो पाता क्योंकि पंचकौड़ी उर्फ़ मृदंगिया छोटी जात से सम्बन्ध रखता है। उच्च वर्ग के नंदूबाबू रामपतिया पर बुरी नज़र रखता है और एक रात जबरजस्ती उसे घोड़े पर उठा के ले जाता है । उसी दुख में मृदंगिया की उगलियाँ मृदंग बजाते बजाते टेढ़ी हो जाती हैं, गला गाते–गाते फट जाता है ।

इस घटना के बाद से वह टेढ़ी उगलियों से मृदंग ठीक से नहीं बजा पाता। जिसका उदाहरण इस प्रकार दृष्टव्य है – "पूरी जमनिका वह नहीं बजा सका। बीच में ही ताल टूट गया। अ–कि हे–ए ए–ए–हा–आआ–हा–हा! सामने झरबेरी के जंगल के उस पार किसी ने सुरीली आवाज़ में, बड़े समारोह के साथ रसप्रिया की पदावली उठाई : न–व–वृन्दा–वन, न–व–न–तरुंग–गन, न–व–नव विकसित फूल!..."[4] इस वाक्यांश में रेणु ने दृश्य को मूर्त करने के लिए रसप्रिया के गीतों की विशिष्ट ध्वनियों का चयन किया है। जिस से पूरा दृश्य प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत होता है। ऐसे कई उदाहरण रेणु की कहानियों में देखे जा सकते हैं जो उनकी शैली की कलात्मक शक्ति का परिचय देती हैं। शब्द–चयन के स्तर पर रेणु ने अपनी कहानियों में ज्यादातर ग्रामीण शब्दों का बहुतायत में प्रयोग किया है। इसके अलावा उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों को भी लिया है।

देशज भाषा का चयन रचनाकार के द्वारा अन्याश ही नहीं किया गया है बल्कि कहानियों के संवादों में इसे जानबूझ कर लिया गया है ताकि उस क्षेत्र विशेष के लोगों की स्वभाविकता बनी रहे। 'आदिम रात्रि की महक' कहानी में रेणु ने मानव करुणा का बढ़िया उदाहरण पेश किया है। इस कहानी में रेणु ने एक अनाथ लड़के की गाथा को अभिव्यक्ति दी है। जिसका जीवन रेलवे के बाबुओं की सेवा में बीतता है। जिसके संवादों में रेणु ने भोजपुरी, हिंदी, अग्रेज़ी शब्दों का चयन किया है। जिसका उदाहरण इस प्रकार है –"...राम बाबू की सब आदत ठीक थी, लेकिन –मा–आ–री इश्की आदमी! जिस टिसन में जाते, पैटमान–पोटर–सूपर को एकान्त में बुलाकर घुसर–घुसर दतियाते।"[5] रेणु ने इस पद में 'स्टेशन' शब्द के स्थान पर देशज शब्द 'टिसन' को लिया है। इसी वाक्य में 'घुसर–घुसर दतियाते' यह तीनों ग्रामीण क्षेत्र के ठेठ शब्द हैं। 'पैटमान–पोटर–सुपर' यह तीनों शब्द अंग्रेजी भाषा से लिए गये हैं। 'एकान्त' शब्द को हिन्दी भाषा से उठाया गया है। तीनों भाषा के शब्दों को रेणु ने अपनी लेखनी की शैली में स्थान दिया है परन्तु ज्यादतर केंद्र में देशज शब्दों को रखा गया है। वाक्य–चयन के अंतर्गत रेणु ने अपनी कहानियों में सरल, मिश्रित, संयुक्त वाक्यों को लिया है। कहानियों के पात्रों के अनुरूप उनका वाक्य–चयन है जैसे ग्रामीण पात्रों के संवादों में देशी भाषा का प्रयोग, शिक्षित पात्रों के लिए परिष्कृत हिंदी का चयन, मुस्लिम पात्रों की बोलचाल भाषा में उर्दू भाषा शैली को लिया है। 'लाल पान की बेगम' कहानी में रेणु ने एक ग्रामीण नारी की मनोवृत्ति को बहुत ही कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

इस कहानी की मुख्य पात्र 'बिरजू की माँ' है जिसे मेले में नाच देखने जाना है। इसी बिंदु को केंद्र में रखकर रेणु ने पूरी कहानी को रचा है। जिसमें पात्रों के संवादों में ग्रामीण जीवन की सम्पूर्ण झांकी मिलती है। जिसका उदाहरण इस प्रकार है – "बेसी बक–बक मत करो। बागड़ के गले से झुनकी खोलती बोली चम्पिया। चम्पिया, डाल दे चूल्हे में पानी! बप्पा आवे तो कहना कि अपने उड़न जहाज पर चढ़कर नाच देख आएं ! मुझे नाच देखने का सौख नहीं ...मुझे जगाइयों मत कोई! मेरा माथा दुख रहा है।"[6]

इस वाक्यांश को रेणु ने देशज भाषा में बुना है। इसी प्रकार 'जलवा' कहानी में रेणु ने मुस्लिम पात्रों के संवादों में उर्दू भाषा का चयन किया है। उदाहरण– "अच्छा ! तो भाभीजान अब तक मुगालते में हैं। क्यों अजीज ? इस तरह किसी का धर्म बिगड़ना कुर नहीं तो और क्या ? लेकिन मान गई तुमको। हो उस्ताद, बुतपरस्त बनने के बाद अपना देवता भी चुना तो एक ऐसा दाढ़ीवाले को जिसने कलमा पढ़कर ...।"[7] 'रेखाएं : वृत्तचक्र' रेणु की आधुनिक विषयों पर लिखी कहानी है। जिसमें एक मरीज की कथा को केंद्र में रखा गया है । जिसकी भाषा शैली में रेणु ने परिष्त हिंदी भाषा का चयन किया है। उदाहरण– "मैं हरगिज़ नहीं लूँगा! मत लेना! अभी चुप तो रहो! मैं चुप भी नहीं रहूँगा! मैं अभी दूध भी नहीं पिऊंगा। दवा भी नहीं।"[8]

भाषा शैली के स्तर पर विचलन रेणु की कहानियों में दूसरी सबसे बड़ी विशेषता है। "सामान्य भाषा के नियम, बन्धन, चलन अथवा पथ को छोड़कर नए का अनुसरण करना नए पथ पर चलना ही विचलन है।"[9] रेणु ने अपनी भाषा शैली में विचलन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

का प्रयोग कई स्तरों पर किया है। जिसका उदाहरण 'लाल पान की बेगम' कहानी इस प्रकार है –"पड़ोसिन मखनी फुआ की पुकार सुनाई पड़ी –क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या ? बिरजू की माँ के आगे और पीछे पगहिया न हो तब न फुआ ? गरम गुस्से में बुझी नुकीली बात फुआ की देह में धंस गई और बिरजू की माँ ने हाथ के ढेले को पास फेंक दिया. .. बेचारे बागड़ को कुकुरमाछी परीशान कर रही है।"[10] 'गरम गुस्से में नुकीली बात फुआ की देह में धस गई' इस पंक्ति में क्रिया विचलन है क्योंकि बात कोई नुखिली वस्तु नहीं है जो देह में धस जाये। 'परेशान' शब्द के स्थान पर 'परीशान' शब्द का यहाँ व्यवहार किया गया है। जो शब्द के स्तर पर विचलन को दर्शाता है।

रेणु की कहानियों में वाक्य के स्तर पर कई समानता देखी जा सकती है। "समानांतरता से आशय है, किसी रचना में समान या विरोधी भारिक इकाइयों का समांतर प्रयोग। इसमें समान भाषिक इकाई की एक या अधिक बार आवृत्ति होती है अथवा दो या अधिक विरोधी भाषिक इकाइयाँ साथ–साथ आती हैं।"[11]

जिसका उदाहरण 'रसिकप्रिया' कहानी से इस प्रकार है –"और तुम नौकरी करते ? किसके यहाँ ? कमलपुर के नन्दू बाबू के यहाँ। नन्दू बाबू के यहाँ ?"[12] वाक्यों को समान बनाने के लिए रेणु ने 'यहाँ' शब्द को तीन बार प्रयोग कर इस शब्द को अंत में रखा है।

अप्रस्तुत–विधान रेणु की लेखन शैली की विशेषताओं में से एक है। मुहावरों और लोकोक्तिओं का प्रयोग प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष रूप से होता है जो किसी भी रचना के सौन्दर्य को बढ़ाने का कार्य करते है। रेणु ने अपनी कहानियों में जगह–जगह इसका प्रयोग किया है। 'तीसरी कसम' कहानी से उदाहरण इस प्रकार है –"हिरामन बोला– नहीं जी ! एक रात नौटंकी देखकर जिन्दगी– भर बोली–ठोली कौन सुने ?....देशी मुर्गी, बिलायती चाल!"[13] देशज लोकोक्ति का उदाहरण 'संवदिया' कहानी से इस प्रकार है– "गाँव के लोगों की गलत धारणा है कि निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया का कम करता है। न आगे नाथ, न पीछे पगहा।"[14]

रेणु ने अपनी कहानियों की भाषा शैली में ध्वनिपक्ष को बहुत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। "ध्वनियों के प्रभावजनित अर्थ से मेरा आशय है अर्थ की वह अनुभूति जो ध्वनियों को सुनने पर उनके प्रभाव स्वरूप श्रोता को होती है।"[15] रेणु की कहानियों में ध्वनियों का प्रयोग प्रभाव–जनित अर्थ उनके उच्चारण पर आधारित है। रेणु ने कहानियों में ध्वनि के समतत्व पर विशेष रूप से बल दिया है। उन्होंने 'घोष' ध्वनियों का ज्यादातर प्रयोग किया है क्योंकि 'अघोष' की तुलना में 'घोष' ध्वनियाँ ज्यादा संगीतात्मक होती हैं। 'तीसरी कसम' कहानी से उदाहरण इस प्रकार है –"अब तो, भोंपा में भोपूं–भोंपू करके कौन गीत गाते हैं लोग? जा रे जमाना ! छोकरा नाच के गीत की याद आई हिरामन को– सजनवा बैरी हो ग'य हमार ! सजनवा ....!' अरे, चिठिया हो तो सब कोई बांचे ; चिठिया हो तो ... हाय ! करमवा, हाय, करमवा...कोई न बांचे हमारो, सजनवा. ..हो करमवा... ।"[16] इसके अलावा रेणु ने अपनी कहानियों की भाषा शैली में भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए पूर्ण विराम, प्रश्न वाचक चिन्ह, अल्प विराम, अवतरण चिन्ह, निर्देशक चिन्ह, योजक चिन्ह, अर्ध विराम, विस्मयादिबोधक चिन्हों का प्रभावशाली ढंग से का प्रयोग किया है।

अंत में यही कहा जा सकता है की रेणु की कहानियों की लेखनी का शैली पक्ष अत्यंत सबल है उनकी आंचलिक कहानियों की लोकप्रियता का आधार उनकी भाषा है। रेणु की कहानियाँ शैलीविज्ञान की कसौटी पर खरी उतरती हैं। रेणु की लिखने का ढंग उनकी प्रयोग्यात्मक भाषा शैली की क्षमता के बारे में बोध कराती है। चयन, विचलन, समानांतरता, अप्रस्तुत–विधान, ध्वनीय शैलीविज्ञान इन पाँचों तत्वों की विशेषताएँ रेणु की रचनाशीलता में पाई जाती हैं। जिससे रेणु की कहानियाँ मर्मशील बनती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नरेन्द्र, डॉ0 अनिता, निराला के आलोचनात्मक लेखन में शैलीवैज्ञानिक मान्यताएँ, आशा बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2001ए पृष्ठ संख्या 64.
2. तिवारी, भोलानाथ, शैलीविज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1997, पृष्ठ संख्या 26.
3. यथावत्, पृष्ठ संख्या 68.
4. रेणु, फणीश्वरनाथ, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1999, पृष्ठ संख्या 17.
5. यथावत्, पृष्ठ संख्या 80.
6. यथावत्, पृष्ठ संख्या 58.
7. यथावत्, पृष्ठ संख्या 97.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

8. यथावत्, पृष्ठ संख्या 132.
9. तिवारी, भोलानाथ, शैलिविज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1997, पृष्ठ संख्या 40.
10. रेणु, फणीश्वरनाथ, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1999, पृष्ठ संख्या 54.
11. तिवारी, भोलानाथ, शैलिविज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1997, पृष्ठ संख्या 81.
12. रेणु, फणीश्वरनाथ, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1999, पृष्ठ संख्या 18.
13. यथावत्, पृष्ठ संख्या 41.
14. यथावत्, पृष्ठ संख्या 69.
15. तिवारी, भोलानाथ, शैलिविज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1997, पृष्ठ संख्या 121.
16. रेणु, फणीश्वरनाथ, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1999, पृष्ठ संख्या 31.

*****